श्रीरामचरितमानस

दोहा:

कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय।
पाव निहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥
251॥

अर्थ: परन्तु धनुषको तोड़कर मनोहर कन्या, बड़ी विजय और अत्यंत सुंदर कीर्ति को पाने वाला मानो ब्रह्मा ने किसी को रचा ही नहीं।

कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान॥
252॥

अर्थ: रघुबीर जी के डर से कुछ कह तो सकते नहीं, पर जनक के वचन उन्हें बाण-से लगे। [जब न रह सके तब] श्रीरामचन्द्रजी के चरण-कमलों में सिर नवाकर वे यथार्थ वचन बोले॥

तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥
253॥

अर्थ: हे नाथ! आपके प्रताप के बल से धनुष को कुकुरमुत्ते (बरसाती छत्ते) की तरह तोड़ दूँ। यदि ऐसा न करूँ तो प्रभु के चरणों की शपथ है, फिर मैं धनुष और तरकस को कभी हाथ में भी न लूँगा॥

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥
254॥

अर्थ: मञ्चरूपी उदयाचल पर रघुनाथजी रूपी बाल सूर्य के उदय होते ही सब संत रूपी कमल खिल उठे और नेत्ररूपी भौंरे सब हर्षित हो गए॥

रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ ॥
255॥

अर्थ: श्रीरामचन्द्रजी को [वात्सल्य] प्रेम के साथ देखकर और सखियों को समीप बुलाकर सीता जी की माता स्नेहवश बिलखकर (विलाप करती हुई सी) ये वचन बोलीं—॥

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब ॥256॥

अर्थ: जिसके वश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सभी देवता हैं, वह मंत्र अत्यंत छोटा होता है। महान मतवाले गजराज को छोटा सा अंकुश वश में कर लेता है॥

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार